**International Journal of Humanities and Social Science Research**
**ISSN: 2455-2070**
**Impact Factor: RJIF 5.22**
**www.socialsciencejournal.in**
**Volume 4; Issue 4; July 2018; Page No. 97-98**

# शिक्षित ग्रामीण युवक : पुनर्निर्माण चेतना

**डॉ. पी. के. शर्मा [1], डॉ. रामनिवास [2]**

[1] अध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग, पी.सी. बागला कॉलेज, हाथरस, उत्तर प्रदेश, भारत।

[2] असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, मुकदम विहारीलाल महाविद्यालय, महुअन, फरह, मथुरां, उत्तर प्रदेश, भारत।

## प्रस्तावना

ग्रामीण पुनर्निर्माण चेतना का आशय ग्रामीण पुनर्निर्माण कार्यक्रमों उनके प्रभाव एवं परिणामों के प्रति जागरूकता से है। किसी भी विषय के प्रति चेतना उस विषय के सम्बन्ध में ज्ञान और लगाव के सम्मिश्रण से अस्तित्व में आती है। यह चेतन सामूहिक चेतना का प्रतिनिधित्व करती है। अतः ग्रामीण पुनर्निर्माण चेतना ग्रामीण समाज में विद्यमान समस्याओं एवं असन्तुलन के निवारण हेतु किये जा रहे नियोजित प्रयासों, उनके प्रभावों एवं परिणामों से सम्बन्धित ज्ञान एवं लगाव के समन्वित स्वरूप की परिचायक कही जा सकती है।

शिक्षित ग्रामीण युवकों में क्या ग्रामीण पुनर्निर्माण के प्रति चेतना है? क्या वे गाँव में पुनर्निर्माण की आवश्यकता एवं पुनर्निर्माण कार्यक्रम से सम्बन्धित ज्ञान रखते हैं? ग्रामीण पुनर्निर्माण चेतना को जाग्रत करने के प्रेरक क्या हैं? क्या वे ग्रामीण समस्याओं से सम्बन्धित ज्ञान के साथ–साथ उन समस्याओं का चिन्तन करते हैं। ग्रामीण पुनर्निर्माण चेतना के सन्दर्भ में यह प्रश्न विचारणीय है कि शिक्षित ग्रामीण युवकों में ग्रामीण पुनर्निर्माण चेतना का विश्लेषण अभीष्ट है।

## ग्रामीण समस्याओं से परिचय

भारतीय गाँव समस्याग्रस्त रहे हैं स्वतन्त्रता से पूर्व से ही भारतीय गाँव की अनेक समस्याएँ रही हैं साथ ही ग्रामीण समाज में आ रहे परिवर्तनों से नवीन समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। ग्रामीण पुनर्निर्माण की पृष्ठभूमि में भी ये समस्याएँ रही हैं समाजशास्त्रीय अध्ययन ग्रामीण पुनर्निर्माण के विश्लेषण से पूर्व इस ओर प्रेरित करता है कि उन समस्याओं का परिचय प्राप्त किया जाय। समाजशास्त्र का मुख्य कार्य सामाजिक समस्याओं की खोज, इनसे सम्बन्धित तथ्यों का उल्लेखन करना है।[1] सेमुअल कोइनिंग इस तथ्य को प्रतिपादित करते हैं कि समाजशास्त्र का मुख्य सम्बन्ध सामाजिक घटनाओं की खोज से होते हुए भी इसमें सामाजिक समस्याओं का अध्ययन इसलिए किया जाता है क्योंकि सामाजिक समस्याओं को सामाजिक व्यवहार से भिन्न नहीं माना जा सकता।[2]

सामाजिक समस्याओं से आशय – ''ऐसी परिस्थितियों या अवस्थाओं जिन्हें समाज हानिकारक मानता है और इसके सुधार की आवश्यकता पड़ती है, से है।''[3] सामाजिक समस्या की अवधारणा के बारे में फुलर और मेयर्स की मान्यता है कि – ''यह वह स्थिति है कि जिसे व्यक्तियों की वही संख्या आकांक्षित सामाजिक मानदण्डों से विचलन मानती है।''[4] यथार्थतः सामाजिक समस्या वह दशा है जिससे समाज का एक खण्ड या एक बड़ा भाग प्रभावित होता है, जिसके हानिकारक परिणाम सामान्यतः होते हैं।[5] अतः ग्रामीण समस्या से आशय उस स्थिति से है जिसे अधिकांश ग्रामीण व्यक्ति अपेक्षित सामाजिक मानदण्डों से विचलन मानते हैं तथा जिसे समुदाय के लिए हानिकारक समझते हैं एवं सामुदायिक रूप से समाधान हेतु प्रयत्नशील होते हैं।

ग्रामीण सामाजिक समस्याओं के विश्लेषण के आधार पर ही पुनर्निर्माण कार्यक्रमों का मूल्यांकन तथा पुनर्निर्माणकालीन चेतना का बोध सम्भव है। इस सन्दर्भ में शिक्षित ग्रामीण युवकों से यह जानने का प्रयास किया गया कि क्या वे ग्रामीण सामाजिक समस्याओं की अवधारणा को समझते हैं। 97 प्रतिशत ग्रामीण युवकों की दृष्टि में, वे परिस्थितियाँ जिन्हें ग्रामीण समाज हानिकारक मानता है तथा जिनके सुधार की जरूरत महसूस करता है वे ग्रामीण समस्याएँ कहलाती हैं, के पक्ष में मत देते हैं। जो इस ओर संकेत करता हे कि वे ग्रामीण समस्याओं की अवधारणा अर्थात् उनके आशय को समझते हैं।

क्या भारतीय गाँव आज भी समस्याग्रस्त हैं? 98 प्रतिशत शिक्षित ग्रामीण युवकों की यह धारणा है कि आज भी भारतीय गाँव समस्याग्रस्त हैं। केवल 2 प्रतिशत छात्र ही इसके विपरीत अपना मत रखते हैं। कहा जा सकता है कि शिक्षित ग्रामीण युवक आज भी भारतीय गाँव को समस्याग्रस्त मानते हैं।

भारतीय गाँव की प्रमुख समस्याएँ क्या हैं? इस सन्दर्भ में पूछे गये प्रश्न के उत्तर निम्न सारणी में दृष्टव्य हैं–

**भारतीय गाँव की समस्याएँ**

| क्रम सं. | समस्याऐं | आवृति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | निर्धनता | 219 | 73 |
| 2 | बेरोजगारी | 243 | 81 |
| 3 | ऋणग्रस्तता | 174 | 58 |
| 4 | अशिक्षा | 144 | 48 |
| 5 | मद्यपान | 162 | 52 |
| 6 | यातायात | 234 | 78 |
| 7 | जनसंख्या वृद्धि | 117 | 39 |
| 8 | जातिवाद | 138 | 46 |
| 9 | स्वास्थ्य एवं चिकित्सा | 111 | 37 |
| 10 | पेयजल | 54 | 18 |
| 11 | रूढिवादिता | 42 | 14 |
| 12 | विद्युत | 204 | 68 |

ज्ञातव्य है कि निर्धनता एवं बेरोजगारी, जनसंख्या वृद्धि, अशिक्षा, ऋणग्रस्तता की असुविधा, विद्युत की समस्या आदि भारतीय गाँव की प्रमुख समस्याएँ हैं। इसके अतिरिक्त मद्यपान, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, रूढ़िवादिता पेयजल आदि की समस्याएँ भी भारतीय गाँव में है परन्तु वे अन्य की तुलना में कम हैं। विचारक इस तथ्य को प्रतिपादित करते हैं कि अनेक ग्रामीण समस्याएँ भारत को विरासत में मिली हैं– ''भारतीय ग्रामीण जीवन अनेक सामाजिक, आर्थिक समस्याओं से ग्रसित रहा है, ब्रिटिश शासनकाल में अंग्रेजों ने भारतीय गाँव की तरफ ध्यान न देकर, शहरों के विकास तक ही

अपना ध्यान केन्द्रित रखा। जिसके कारण अनेक समस्याओं से ग्रस्त भारतीय गाँव प्रगति के क्षेत्र में पिछड़ते चले गये, यह एक सर्वविदित तथ्य है। निर्धनता, बेकारी, अशिक्षा, ऋणग्रस्तता, कृषि का पिछड़ापन, जातिवाद, स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सफाई, पेयजल, यातायात, रूढ़िवादिता आदि अनेक सामाजिक आर्थिक समस्याएँ विद्यमान थीं।''6 ये सभी समस्याएँ अल्पाधिक मात्रा में आज भी भारतीय गाँव में विद्यमान हैं।

## ग्रामीण समस्याओं पर चिन्तन

शिक्षित ग्रामीण युवकों की पुनर्निर्माण चेतना की विद्यमानता हेतु केवल ग्रामीण समस्याओं से परिचय को ही ज्ञात करना पर्याप्त नहीं अपितु यह तथ्य महत्त्वपूर्ण है कि क्या वे ग्रामीण समस्याओं पर चिन्तन करते हैं? ग्रामीण पुनर्निर्माण के प्रति उनकी धारणा क्या है? ज्ञात करने का प्रयास किया गया।

क्या शिक्षित ग्रामीण युवक गाँव की समस्याओं पर विचार करते हैं? पूछे गये प्रश्न के सन्दर्भ में प्राप्त उत्तर निम्न सारणी में दृष्टव्य हैं–

**शिक्षित ग्रामीण युवकों का ग्रामीण समस्याओं पर चिन्तन**

| तथ्य | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|
| गाँव की समस्याओं पर चिन्तन करते हैं | 234 | 78 |
| गाँव की समस्याओं पर चिन्तन नहीं करते हैं | 66 | 22 |
| | 300 | 100 |

वे शिक्षित ग्रामीण युवक (234) जो ग्रामीण समस्याओं पर विचार करते हैं। उनके चिंतन का स्वरूप क्या है? पुनर्निर्माण के प्रति मानसिकता क्या है?

शिक्षित ग्रामीण युवकों की ग्रामीण पुनर्निर्माण के प्रति मानसिकता क्या है? वे गाँव के पुनर्निर्माण में रूचि रखते हैं? पूछे गये प्रश्न के उत्तर में ज्ञात तथ्य इस प्रकार हैं–

**शिक्षित ग्रामीण युवकों की ग्रामीण पुनर्निर्माण में रूचि**

| तथ्य | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|
| ग्रामीण पुनर्निर्माण में रूचि रखते हैं | 255 | 85 |
| ग्रामीण पुनर्निर्माण में रूचि नहीं रखते हैं | 45 | 15 |
| | 300 | 100 |

**निष्कर्षतः** कहा जा सकता है कि अधिकांश शिक्षित ग्रामीण युवकों की गॉव के पुनर्निर्माण में रूचि है।

वे शिक्षित ग्रामीण युवक 255 जो गाँव के पुनर्निर्माण में रूचि रखते हैं। उनकी रूचि इस हेतु किस प्रकार की है? यह जानने का प्रयास किया गया। ज्ञात तथ्य निम्न सारणी में प्रदर्शित हैं–

**गाँव के पुनर्निर्माण में रूचि की प्रकृति**

| तथ्य | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|
| शिक्षा में नियोजित कार्यक्रमों का परिचय प्राप्त कर | 255 | 85 |
| पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित विकास समाचारों को पढ़कर | 45 | 15 |
| ग्राम पंचायत के विकास कार्यों में सहयोग कर | 198 | 77.6 |
| गाँव में हो रहे विकास कार्यों की जानकारी प्राप्त कर | 189 | 74.1 |
| | 189 | 74.1 |

तथ्यों से ज्ञात होता है कि शिक्षित ग्रामीण युवकों की ग्रामीण पुनर्निर्माण की रूचि की पृष्ठभूमि में पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित विकास के समाचार, गाँव पंचायत के विकास कार्यों में सहयोग तथा गाँव में हो रहे विकास कार्यों की जानकारी प्राप्त करना है। शिक्षा के पाठ्यक्रम में नियोजित कार्यक्रमों का परिचय प्राप्त कर, पुनर्निर्माण में रूचि के आधार का प्रतिशत अपेक्षाकृत कम है जो इस ओर संकेत करता है कि अध्ययनरत ग्रामीण युवाओं में शिक्षा संकाय एवं विषयों की विभिन्नता है।

## निष्कर्ष

- अधिकांश शिक्षित ग्रामीण युवक ग्रामीण समस्याओं पर चिन्तन करते हैं उनके कारणों पर विचार कर जन सहयोग से समाधान की सोचते हैं।
- शिक्षित ग्रामीण युवकों की दृष्टि में विकास योजनाएँ स्थानीय गाँव की समस्याओं के अनुरूप नहीं हैं। इस कारण ग्रामीण पुनर्निर्माण योजनाओं के उचित लाभ गाँव को प्राप्त नहीं हो पा रहे।
- शिक्षित ग्रामीण युवकों की दृष्टि में ग्रामीण पुनर्निर्माण योजनाओं के उचित लाभ गाँव को न मिलने के कारण ग्रामीणों की अशिक्षा, प्रशासनिक अधिकारियों की उदासीनता, अकुशल नेतृत्व, साधनों एवं जन सहयोग का अभाव लक्षित होता है।

## सन्दर्भ


1. सेमुअल कोइनिंगः समाजशास्त्र, पृ0 249
2. वही, पृ0 249
3. वही पृ0 250
4. Fuller RC, Myres RR. The Natural History of a Social Problem, American Sociological Review, 1941, 320.
5. Reinhardt JM. Others Social Problem and Social Policy, American Book Co., Newyork, 1952, 14.
6. डॉ. नीलम पालीवाल : ग्रामीण पुनर्निर्माण और साहित्य, पृ0 37